पद ३६

(राग: खमाज - ताल: धुमाळी)

प्रभु तो आहे समर्थ। कां करितां चिंता व्यर्थ।।ध्रु.।। त्यागुनि गृह सुत कांता। सर्वहि संचित हो निज अर्था। मनोहर म्हणे शरण आलिया। पुरवितो मनोरथा।।१।।